Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

07

किन्नर विमर्श की समस्याएँ और उनका समाज में योगदान

डॉ. नमिता गोस्वामी
(सहायक आचार्य)
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

परिचय

किन्नर या हिजड़ा समुदाय भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे सदियों से सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक दृष्टिकोण से एक विशेष स्थान प्राप्त है। हालांकि, किन्नर समुदाय को भारतीय समाज में लंबे समय से अलग–थलग रखा गया है और समाज में उनके अधिकारों का उल्लंघन होता रहा है। समय–समय पर इस समुदाय पर विमर्श हुआ है, लेकिन फिर भी उन्हें समानता और सम्मान की अधिकारिता से वंचित रखा जाता है।

किन्नर समुदाय भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग होते हुए भी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रहा है। यह शोध पत्र किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी स्थिति का विश्लेषण करता है। साथ ही, किन्नरों के अधिकारों, उनकी सामाजिक स्वीकृति, और समावेशी विकास के उपायों पर भी प्रकाश डालता है।

किन्नर (ट्रांसजेंडर) समुदाय प्राचीन काल से भारतीय समाज में उपस्थित रहा है। ऐतिहासिक रूप से इन्हें धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, लेकिन समय के साथ इनका सामाजिक दर्जा घटता चला गया। आज भी उन्हें भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार और हिंसा का सामना करना पड़ता है।

''किन्नर समुदाय की पहचान''

किन्नर समुदाय को भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही एक विशिष्ट पहचान प्राप्त है। हालांकि, इस समुदाय को अक्सर पुरुष और महिला के बीच की पहचान के रूप में देखा जाता है, लेकिन इनकी पहचान का स्वरूप अधिक जटिल और व्यापक है। किन्नर वे लोग होते हैं जो न तो शुद्ध पुरुष होते हैं और न ही शुद्ध महिला, बल्कि इनकी पहचान का स्वरूप समाज द्वारा निर्धारित बाइनरी (पुरुष–महिला) प्रणाली से परे है। भारतीय समाज में इन्हें पारंपरिक रूप से ''हिजड़ा'' कहा जाता है।

किन्नरों का विभिन्न क्षेत्रों में संघर्ष –

आवास संघर्ष

किन्नर बेघर है वर्तमान में भी उन्हें रहने के लिए भी कोई किराए पर घर नहीं देता। किन्नर के रूप में जन्म लेना कोई गुनाह नहीं है।[1]

पारिवारिक और स्वयं का संघर्ष

कविता – "किन्नर हूं"

तुम्हारी तरह मै भी लिया हूं जन्म माँ की कोंख से मुझे भी जनते समय माँ ने सहा है असह्य दर्द
की व्यथा तुम्हारी तरह मुझे भी मिली है माँ के आंचल की छांव।
फिर भी मैं तुमसे अलग हूं इसलिए कि ईश्वर ने दे दी है मुझे किन्नर की छाप, हाँ ! मैं किन्नर हूं
पर तुम्हारी तरह ईश्वर के अभिशाप को नहीं कोसता हूं।
तालियां बजाकर तुम्हारे तिरस्कार को मुस्कुराकर सह लेता हूं, अपने शुभाशीष से सबको खुश रखता हूं।
मै पहुँच जाता हूं तुम्हारी खुशी में शरीक होने तालियां बजा–बजाकर नाच–गाकर मैं भी जी लेता हूं।
बृहन्नला हूं संगीत मेरा जीवन है ब्रह्मा की छाया हूं कुदरत की माया हूं,
फिर भी मैं समाज से बहिष्कृत धरती का भार हूं।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

तुम्हारी तरह मेरे भी अन्दर है सहनशीलता मैं भी दुख–दर्द को परिभाषित कर सकता हूं,
आखिर क्यों तुम्हारी नजरों से गिरा हूं यही न कि मैं एक किन्नर हूँ।[2]

आर्थिक संघर्ष

किन्नरों को समाज में आर्थिक संघर्ष का सामना भी करना पड़ता है। समाज में उन्हें कहीं न तो नौकरी मिलती है ओर अगर कोई व्यापार या व्यवसाय भी करे तो कोई उनके पास जाना पसंद नहीं करता तो करे तो क्या करे।

"हम किन्नर पाई–पाई को तरसते हैं, आर्थिक रूप से भी शोषण होता है। जब तक पैसे पास होते हैं तब तक हर रिश्ता हमसे जुड़ना चाहता है। जब रुपया खत्म हो जाता है तब तक जिंदगी तमाशा बन जाती है कोई भी आकर हमें गाली गलौच देकर निकल सकता है।"[3]

अल्पसंख्यक विमर्श/किन्नर विमर्श

- व्युत्पत्ति– 'किन्नर' दो शब्दों के योग से बना है 'किम' + 'नर' = किन्नर, जिसका अर्थ होता है, हिजड़ा, नपुंसक।
- किन्नर विमर्श से तात्पर्य है, किन्नरों के जीवन से संबंधित समस्याओं की चर्चा करना।
- 2006 ई. में किन्नरों को 'थर्ड जेंडर' का दर्जा दिया गया, साथ ही साहित्यकारों काभी ध्यान इनकी ओर गया।
- थर्ड जेंडर विमर्श 21वीं शताब्दी में अधिक प्रचलित हुई।
- थर्ड जेंडर विमर्श से संबंधित हिंदी की प्रथम रचना – 'दरमिया' कहानी है। इसके रचनाकार सुभाष अखिल है। रचनाकाल– 1978 ई. है।
- 1980 ई. में यह कहानी 'सारिका' पत्रिका में अक्टूबर के अंक में प्रकाशित हुआ था।
- इस कहानी को नरेंद्र कोहली ने 'थर्ड जेंडर' विमर्श से संबंधित प्रथम रचना माना है।
- 2018 ई. सुभाष अखिल के द्वारा इस कहानी को उपन्यास का रूप दे दिया गया।[4]

बहिष्कृत प्रथा के विरुद्ध संघर्ष

किन्नर की सबसे बड़ी विड़बना यह है कि समाज तो बहुत दूर की बात है खुद का परिवार भी स्वीकार नहीं करता। नहीं कोई न्याय मिलता है ओर न ही कोई उनकी सुनता है। इसी क्रम में चित्रा मुद्दगल 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' उपन्यास में बहिष्कृत प्रथा के संघर्ष संदर्भ में कहती हैं, "कभी–कभी मैं अजीब सी अंधेरी बंद चमगादड़ों में अटी सुरंग में स्वयं को घुटता हुआ पाता हूं। बाहर निकलने को छटपटाता मैं मनुष्य तो हूं ना? कुछ कमी है मुझमें, इसकी इतनी बड़ी सजा।" 'विनोद' के माध्यम से बहिष्कृत संघर्ष चित्रा मुद्दगल ने साझा करने की कोशिश की है. वर्तमान में किन्नर समाज त्रासदी में जी रहा है, सामाजिक मानसिकता के वजह से। वह किन्नर है ये उसका दोष नहीं। वह मनुष्य ही है, स्त्री की कोख से पैदा हुआ। समाज को उन्हें सम्मान देना चाहिए, बहिष्कृत नहीं करना चाहिए। उनके साथ प्रेम से, मिलजुलकर रहना होगा, तभी उनमें जीने की आस निर्माण होगी।[5]

लैंगिक विकृति का संघर्ष

स्त्री और पुरुष को ही हमारा समाज स्वीकार करता है। इनके अतिरिक्त लैंगिक विकृति के रूप में जन्में लोगों को' हिंजड़ा' या 'किन्नर' कहकर उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। एक किन्नर के रूप में जन्म लेने पर संघर्ष की पहली शुरूआत घर से ही होती है। जहाँ उसे केवल अपमान और तिरस्कार ही प्राप्त होता है –

जन्मते ही मेरे
चेहरे सबके
क्यूँ मायूस हुए
घर–भर के अधरों की
मुस्कानों पर कर्फ़्यू लगे
देख मुझको सब ने मुख मोड़ा
किन्नर कहकर मुझको छोड़ा।[6]

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

मानसिक संघर्ष

परिवार के सदस्य को मानसिकता बदलने की जरूरत है। वे अपनी संतान की वेदना नहीं समझेंगे, तो कौन समझेगा? मनुष्य को ऐसे संवेदनशील विषय पर चिंतन की जरूरत है। विस्थापन संघर्ष वर्तमान किन्नर समाज की भीषण समस्या है विस्थापन। इस विषय पर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने अपनी आत्मकथा मैं हिजडा... मैं लक्ष्मी! में इस बात का उल्लेख किया है। "इन सबके साथ मानसिक स्वास्थ्य, जेंडर से संबंधित प्रश्नों पर काम करने वाले वैद्यकीय और बाकी व्यवसायिकों से संपर्क करना चाहिए और उनकी मदद लेनी चाहिए। ट्रांसजेंडर बिहेवियर' वाले लडकों से 'लडके जैसा ही बर्ताव करो' या लडकियों से लडकियों जैसा ही बर्ताव करो' जबरदस्ती ऐसी अपेक्षा करने से कुछ भी हासिल नहीं होता।"[7]

किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि''

महाभारत'' में शिखंडी और बृहन्नला का उल्लेख।
– ''रामायण'' में भगवान राम द्वारा किन्नरों को आशीर्वाद देने की कथा।
– मुगलकाल में किन्नरों को शाही दरबार में उच्च पद प्राप्त थे।
– ब्रिटिश शासन के दौरान ''अपराधी जनजाति अधिनियम, 1871'' ने इन्हें समाज से और अधिक दूर कर दिया।

समकालीन स्थितिः

– आधुनिक भारत में किन्नरों को पहचान और अधिकार के लिए संघर्ष करना पड़ा।
– ''2014 का नालसा बनाम भारत सरकार मामला'' ऐतिहासिक रहा, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने किन्नरों को '''थर्ड जेंडर''' के रूप में मान्यता दी।
– ''ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019'' के तहत शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य संबंधी अधिकार सुनिश्चित किए गए।

सामाजिक स्थिति और चुनौतियाँ''

पारिवारिक एवं सामाजिक बहिष्कारः''
– अधिकतर किन्नर बचपन में ही अपने परिवार द्वारा अस्वीकार कर दिए जाते हैं।
– इन्हें हिजड़ा समुदाय में शामिल होकर गुरुओं के अधीन रहना पड़ता है।[8]

आर्थिक स्थितिः''

– किन्नरों को पारंपरिक रूप से भिक्षावृत्ति और सेक्स वर्क पर निर्भर रहना पड़ता है।
– शिक्षा और रोजगार के अवसर सीमित होते हैं।

स्वास्थ्य समस्याएँः''

– चिकित्सा सेवाओं में भेदभाव।
– यौन स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूकता की कमी।

कानूनी अधिकार और नीतियाँ''

प्रमुख न्यायिक निर्णय एवं कानूनः''

- ''नालसा बनाम भारत सरकार (2014)'': किन्नरों को 'तीसरे लिंग' की कानूनी मान्यता।
- ''ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019'': शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में गैर–भेदभाव का प्रावधान।
- ''भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 21'': समानता, भेदभाव का निषेध, और गरिमा के साथ जीने का अधिकार।

सरकारी योजनाएँः

– कुछ राज्यों में किन्नरों को सरकारी नौकरियों और स्वास्थ्य सुविधाओं में प्राथमिकता।
– केरल, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में ट्रांसजेंडर नीति लागू।

समाज में परिवर्तन और सुधार के उपाय

1. ''शिक्षा और रोजगार के अवसर'':
– किन्नरों के लिए विशेष शैक्षिक योजनाएँ और छात्रवृत्ति।
– सरकारी और निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाना।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

2. ''कानूनी सुधार'':
– ट्रांसजेंडर अधिकार अधिनियम को और प्रभावी बनाना।
– कानूनी पहचान पत्र जारी करने की प्रक्रिया को सरल बनाना।
3. ''सामाजिक जागरूकता अभियान'':
– स्कूलों और कॉलेजों में जेंडर संवेदनशीलता कार्यक्रम।
– मीडिया और फिल्मों में किन्नरों की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करना।
4. ''स्वास्थ्य और सुरक्षा'':
– ट्रांसजेंडर हेल्थकेयर सिस्टम को मजबूत करना।
– मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना।[9]

किन्नरों का समाज में योगदान

- किन्नर समुदाय ने समाज में राजनीति, पुलिस, और समाजसेवा के क्षेत्र में काम किया है।
- किन्नर समुदाय ने समाज में गरीबों के लिए खाना खिलाने की पहल की है।
- ''धार्मिक और सांस्कृतिक महत्वः किन्नर समुदाय का भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे कई स्थानों पर धार्मिक अनुष्ठानों, जैसे विवाह और बच्चे के जन्म पर, आशीर्वाद देने का कार्य करते हैं।
- किन्नर समुदाय ने सामाजिक सेवाएं दी हैं। इन सेवाओं से समाज में सामाजिक क्षमता और न्याय का विकास हुआ है।
- किन्नर समुदाय ने सांस्कृतिक संरक्षण का काम किया है। इससे भारतीय सांस्कृतिक विरासत की समृद्धता और विविधता बनी है।
- किन्नर समुदाय ने समाज में सामाजिक कल्याण के लिए काम किया है।
- किन्नर समुदाय ने समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक सहायता के लिए काम किया है।
- ''समाज सेवाः'' किन्नर समुदाय का एक हिस्सा समाज में कार्य करता है, जैसे विवाह और अन्य पारंपरिक अनुष्ठानों में आशीर्वाद देने के साथ ही कई बार गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करना।
- ''सामाजिक परिवर्तन के संकेतः'' किन्नर समुदाय की उपस्थिति सामाजिक बदलाव और लिंग विविधता के प्रतीक के रूप में देखी जा सकती है। वे समाज में लिंग की स्थायी धारा को चुनौती देते हैं, जो समानता और समावेशिता के लिए प्रेरित करता है।[10]

''सुझाव''

- समाज में किन्नरों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए, ताकि भेदभाव और उपेक्षा की मानसिकता समाप्त हो सके।
- किन्नरों के कानूनी अधिकारों को सुनिश्चित किया जाए।
- किन्नरों के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएं।
- किन्नरों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाया जाए।

''निष्कर्ष''

किन्नर विमर्श केवल एक सामाजिक बहस नहीं, बल्कि एक मानवीय मुद्दा है। समाज में समानता और सम्मान पाने की उनकी लड़ाई जारी है। कानूनी सुधार और सामाजिक स्वीकृति के साथ–साथ साहित्य, सिनेमा और मीडिया को भी उनकी वास्तविकता को अधिक संवेदनशीलता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। किन्नर विमर्श केवल कानूनी पहचान का विषय नहीं है, बल्कि यह समाज में उनकी स्वीकृति, गरिमा और समानता से जुड़ा मुद्दा है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और कानूनी सुधारों के माध्यम से किन्नरों को समाज की मुख्यधारा में लाया जा सकता है। परिवारों को जागरूक करके, सरकारी नीतियों को प्रभावी बनाकर और सामाजिक सोच में बदलाव लाकर ही वास्तविक समानता प्राप्त की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ –

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

1. https://pehachaan.com/ समकालीन–हिन्दी–उपन्यासों
2. https://www.amarujala.com/kavya/mere-alfaz/o-a-kinnar-hun–ओम प्रकाश अत्रि भारती शान्तिनिकेतन (प.बंगाल)
3. अस्तित्व की तलाश में सिमरन–डॉ.मोनिका शर्मा–पृ.97
4. https://abhivyakti.life/2022/11/08/अल्पसंख्यक–विमर्श–किन्न
5. नाला सोपारा' उपन्यास लेखिका चित्रा मुद्दगल
6. संपादकः डॉ0 विजयेंद्रप्रताप सिंह, अस्तित्व और पहचान (थर्ड जेन्डर पर केन्द्रित कविता संग्रह) अमन प्रकाशन कानपुर, उ0प्र0, प्रथम संस्करण – 2019, पृष्ठ सं0–120
7. महेन्द्र भीष्म :किन्नर कथा, सामयिक बुक्स, 2011, पृ. 91
8. नालसा बनाम भारत सरकार (2014) ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019
9. ''ट्रांसजेंडर अधिकार और भारतीय समाज'' – इंडियन जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज ''किन्नर समुदाय की आर्थिक और सामाजिक स्थिति'' – नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन रिपोर्ट
10. https://www.google.com/search?samaj+me+yogdan

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved